मधरर्सडे ... महान शक्ति दे...!!!

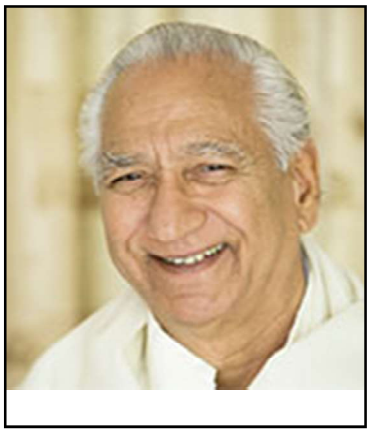

भारतीय माता का स्थान सर्वोच्च है। सभी जानते हैं कि हमारे पूर्वज देवी-देवताएं भी माता श्री को हमेशा सर्वोच्च स्थान प्रदान करते रहे हैं। जो श्री लक्ष्मी-नारायण व श्री सीता-राम हैं। ये अवश्य सोचने की बात है कि मध्यकाल का जो समय है उस समय समाजीकारणों के कारण माताओं को वह सम्मान नहीं मिला जो आदिकाल में मिलता रहा है बल्कि माताओं को घर की चार दीवारी में रहने व पर्दानशीन रहने पर मजबूर किया।

१९३७ बीसवीं सदी के लगभग आदिकाल में एक बहुत बड़े समाज सेवी, दूरादेशी, फ्राकदिल, नम्रचित्त आदि। अनके गुणों के धनी तथा समाज के अंदर जिनका उनका नाम था। कोलकत्ता की न्यू मार्केट में हीरे जवाहरातों का कारोबार करने वाले दादा लेखराज, उन्होंने फिर से मातृशक्ति को उनका योग्य स्थान प्रदान करने हेतू एक संकल्प लिया और ओम मंडली के नाम से एक नई शुरूआत की। जिसमें समस्त परिवार माता, पिता, बच्चे, बहू सब सम्मिलत हो सकते थे। अपनी सामाजिक व आध्यात्मिक तथा आर्थिक सब बातों में एक दो के स्नेही सहयोगी बनकर समाज को एक नई दिशा देने के निमित्त बनें। माता गुरू का स्थान पुन: दिलाने हेतू उन माताओं को ईश्वरीय ज्ञान और सहजराजयोग से सशक्त बनाया।

सदीयों की गुलामी में रहने के बाद ये बहनें, माताएं, शिव शक्ति स्वरूप में स्वयं को जाग्रत करने लगी और भारत में जिन देवीयों की हर वर्ष धूमधाम से पूजा अर्चना होती है। उनके गुणों व शक्तियों को स्वयं मे धारण करके ये चेतन सरस्वती, लक्ष्मी, गायत्री, शीतलादेवी, दुर्गा, अम्बा आदि-आदि के स्वरूप में इस संसार को पुन: कलियुग से सतयुग की ओर ले जाने के लिए परमपिता शिव का झंडा अपने हाथों में लेकर एक नयी लहर शुरू करने के निमित्त बनीं। आज लाखों की संख्या में भारत तथा विदेश में ऐसी महिलाएं अपने परिवारों सहित अपने जीवन को दिव्य गुण सम्पन्न बनाकर अनेक आत्माओं को सच्ची शांति व सुख का मार्गदर्शन कर रही हैं।

प्रजापिता ब्रह्मा की दिव्य संतान होने के नाते उन्हें राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी के रूप में जाना जाता है। हरेक ब्रह्माकुमारी बहन के मन में यही उद्‌गार सदा रहते हैं कि संसार के सभी भाई और बहनों को परमपिता परमात्मा सर्वशक्तिवान की पहचान देकर उन्हें योगयुक्त बनाकर सर्व बहनों व माताओं को आध्यात्मिक, नैतिक, पारिवारिक मानवीय मूल्यों मे सशक्त बनाएं। ये एक अद्भूत आध्यात्मिक सशक्तिकरण की सेवा विश्व के कोने-कोने तक की जा रही है। जैसे इतिहास के अंदर महान योद्धाओं को जैसे शिवाजी, महाराणाप्रताप को गुलामी की जंजीरों से छूटने के लिए उन्हें उनकी माता ने तैयार किया। उसी तरह से परमपिता परमात्मा ने आदि देव ब्रह्मा बाबा के द्वारा विश्व की सर्व आत्माओं को काम, क्रोध , लोभ, मोह , अंहकार इन पाँच विकारों की बेड़ियों में जकड़ी हुई मनुष्य आत्माओं को स्वतंत्र बनाने के लिए ये रूहानी आत्मिक शिव शक्ति सेना को जागृत किया है और विश्व परिवर्तन के लिए जिम्मेदार बनाया है। क्योंकि विश्व ईश्वरीय परिवार है। इस परिवार को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाने के निमित्त हमेशा माताओं ने अपनी कुर्बानी देकर भी मार्ग दर्शन किया। तो आज मातृ दिवस पर हम सभी मातृशक्ति को प्रणाम करते हैं सभी माताओं - बहनों को शिवशक्ति बनने की बधाई देते हैं।

-ब्र.कु. निर्वैर, महा सचिव ,ब्रह्माकुमारीज़

।